



Child Development Center

— जानो और मानो —

ल र्नि ग

डि से बिलि टी ज़

'लर्निंग डिसेबिलिटीज़' (एल.डी.) क्या होती है?

लर्निंग डिसेबिलिटीज़ एक ऐसी अवस्था है जो बच्चे की जानकारी प्राप्त करने, समझने, याद रखने और/या प्रतिक्रिया देने की क्षमता को प्रभावित करती है। दूसरे शब्दों में कहें तो-उनका दिमाग अलग तरह से काम करता है, जिसकी वजह से उन्हें नई जानकारी, और अक्सर पढ़ाई से सम्बंधित नई चीज़ें सीखने और इस्तेमाल में लाने में ज्यादा समय लग सकता है।

एल.डी. वाले बच्चों को पढ़ने, लिखने, स्पेलिंग, गणित में दिक्कतें आ सकती हैं और इसके आलावा प्लानिंग, प्रॉब्लम सुलझाने में अपनी जानकारी का प्रयोग करने और जानकारी को संगठित करने में भी चुनौती आ सकती है। कभी-कभी ये चुनौतियां सिर्फ स्कूल के काम में ही नहीं, बल्कि दैनिक जीवन में भी उनकी सोच और समस्या सुलझाने की क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसा इसलिए नहीं है कि वे मेहनत नहीं कर रहे हैं या आलसी हैं या उनकी बुद्धि का स्तर कम है। वास्तव में, एल.डी. वाले बच्चे दूसरे बच्चों के जितने या शायद उनसे ज़्यादा सक्षम होते हैं। बस उनके दिमाग का काम करने का तरीका थोड़ा अलग होता है जो उनके सीखने और प्रतिक्रिया देने पर प्रभाव डालता है

लर्निंग डिसेबिलिटीज़ बचपन से ही मौजूद होती है, लेकिन आमतौर पर स्कूल जाने की उम्र में इसका निदान होता है। लर्निंग डिसेबिलिटीज़ व्यक्ति में जीवन भर रहती है और इसका कोई 'इलाज' नहीं किया जा सकता, लेकिन जल्द पहचान और अर्ली इंटरवेन्शन के साथ इस पर काम किया जा सकता है। सही समर्थन और इंटरवेन्शन से एल.डी. वाले बच्चे अपनी चुनौतियों से निपटना सीख सकते हैं और आगे चल कर सफल करियर और जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

लर्निंग डिसेबिलिटीज़ के विभिन्न प्रकार क्या हैं?

लर्निंग डिसेबिलिटीज़ के कई प्रकार हैं। पढ़ने, गणित और लिखित अभिव्यक्ति के क्षेत्रों को प्रभावित करने वाले प्रकार ज्यादा पाए जाते हैं :

- **डिस्लेक्सिया** शायद सबसे अधिक जाना जाता है और इसमें शामिल है पढ़ने या जो पढ़ा जा रहा है उसे समझने में कठिनाइयां। कुछ बच्चों को अक्षरों को सीखने में, अक्षर को उसके उच्चारण से जोड़ने में और स्पेलिंग में, कुछ को शब्द/वाक्य/पैराग्राफ को पढ़ने में कठिनाई होती है, तो कुछ बच्चे वैसे तो अच्छी तरह से पढ़ सकते हैं लेकिन उन्होंने क्या पढ़ा है यह समझने में मुश्किल होती है। कुछ बच्चों को दोनों - पढ़ने और पढ़ी जा रही चीज़ को समझने - में चुनौती हो सकती है।



- **डिस्कैलकुलिया** गणित से जुड़ी लर्निंग डिसेबिलिटी है। इसमें बच्चों को गणित के तथ्यों, संख्याओं की पहचान, गिनती करने, कैलकुलेशन करने और गणित सवालों को हल करने में कठिनाइयां होती हैं।
- **डिसग्राफिया** लेखन से जुड़ी लर्निंग डिसेबिलिटी है। इसमें शामिल है लिखावट और लिखित अभिव्यक्ति में कठिनाइयां। इन बच्चों की लिखावट को पढ़ना मुश्किल होता है, स्पेलिंग, व्याकरण और विराम चिन्ह का आभाव होता है, लिखते समय शब्दों और वाक्यों के बीच उचित अंतर नहीं रखते हैं। वे जो सोच रहे हैं उसे ठीक प्रकार से लिखने में कठिनाई होती है और उलट-पुलट वाक्य रचना कर सकते हैं।



क्या स्कूल में पढाई में कठिनाइयों का सामना करने वाले सभी बच्चों को लर्निंग डिसेबिलिटीज़ है?

स्कूल में कई बच्चों को पढाई में अन्य कारणों से भी कठिनाइयां होती हैं। कभी-कभी ऐसा इसलिए होता है कि उन्हें कोई विषय पसंद नहीं है या उनकी रुचियां कुछ और होती हैं। ये लर्निंग डिसेबिलिटीज़ नहीं हैं।

देखने या सुनने की अक्षमता के कारण पढाई में मुश्किलें, या बौद्धिक विकलांगता, ऑटिज्म, किसी भावनात्मक बाधा या पर्यावरणीय, सांस्कृतिक और आर्थिक अभावों के कारण पढाई में कठिनायों भी लर्निंग डिसेबिलिटीज़ नहीं हैं।

लर्निंग डिसेबिलिटीज़ के क्या लक्षण होते हैं ?

बिना किसी कारण के पढाई में दिक्कतें, या आयु बढ़ने के साथ-साथ बेहतर न होनेवाली, सीखने से जुड़ी समस्याएँ, ज़ाहिर तौर से लर्निंग डिसेबिलिटीज़ के सबसे स्पष्ट संकेत हैं। विभिन्न आयु स्तर में देखे जाने वाले लर्निंग डिसेबिलिटीज़ के कुछ सामान्य संकेत:

प्री-स्कूल (3 - 5 वर्ष)

- देख कर या सुन कर जानकारी लेने और समझने में कठिनाई
- जो सिखाया है, उसे याद रखने में कठिनाई
- रायमिंग शब्द, अक्षरों को उसके उच्चारण से जोड़ने में, अक्षरों और नंबर को पहचानने में, आकार और रंगों में अंतर में कठिनाई
- निर्देशों या दिनचर्या का पालन करने में कठिनाई
- मोटर स्किल्स से जुड़ी कठिनाईयां (उदाहरण के लिए पेंसिल पकड़ना या कैंची से काटना)
- सामाजिक कौशल से जुड़ी कठिनाईयां (दूसरों से शेयर करना, बारी-बारी से खेलना)

प्राइमरी स्कूल (6 - 11 वर्ष)

- देख कर या सुन कर जानकारी लेने और समझने में कठिनाई
- खराब लिखावट और स्पेलिंग, अक्षरों को उल्टा पढ़ना और लिखना
- पढ़ने में और/या पढ़ी जा रही जानकारी समझने में कठिनाई
- लिखित अभिव्यक्ति में मुश्किलें, व्याकरण और विराम चिन्ह में गलतियाँ
- ब्लैकबोर्ड से कॉपी करने में तकलीफ
- गणित के चिन्हों में गड़बड़, वर्ड प्रॉब्लम को समझना, घड़ी देखकर समय बताना और पहाड़े याद करने में कठिनाइयां
- जानकारी को याद करने और निर्देश का पालन करने में कठिनाई
- कार्यकारी कौशल से जुड़ी कठिनाइयाँ जैसे अपने काम या सामान का ध्यान रखना
- सामाजिक कौशल में कठिनाई - दोस्त बनाना, सामाजिक संकेतों को समझना

सेकेंडरी स्कूल (12 - 18 वर्ष)

- पढ़ी जा रही जानकारी को समझने, निबंध लिखने और ऊँचे स्तर के गणित से जुड़ी कठिनाइयाँ
- जानकारी का सारांश करने, अपने शब्दों में लिखने और दी गयी जानकारी में से अनुमान लगाने में कठिनाई
- कक्षा में दिए गए निर्देशों की गति के साथ गति बनाए रखने में कठिनाई
- टाइम मैनेजमेंट और पढ़ाई की कार्यकारी में मुश्किल
- सामाजिक कौशल से जुड़ी कठिनाईयां - ग्रुप डायनेमिक्स को न समझ पाना

ये संकेत हर बच्चे में और लर्निंग डिसेबिलिटीज़ के प्रकार के अनुसार भिन्न हो सकते हैं। ध्यान रखें कि केवल इन संकेतों के होने से लर्निंग डिसेबिलिटीज़ है, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। लर्निंग डिसेबिलिटीज़ का निदान करने के लिए प्रोफेशनल असेसमेंट करवाना आवश्यक है।





अगर मेरा बच्चा लर्निंग डिसेबिलिटीज़ के संकेत दिखाता है तो मुझे किससे संपर्क करना चाहिए?

एल.डी. का निदान एक पूरा प्रोसेस होता है जिसमें ऑब्जरवेशन, बच्चे के विकास का इतिहास और टेस्ट शामिल हैं। आम तौर पर सबसे पहले बच्चे को डेवलपमेंटल पेडिअट्रिशन को दिखाना चाहिए। वे बच्चे को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में शामिल करके यह समझने की कोशिश करते हैं कि बच्चा कैसे सोच रहा है, कैसे जानकारी को समझ रहा है और कैसे प्रतिक्रिया दे रहा है। इस माध्यम से वे बच्चे का असेसमेंट करते हैं और बच्चे के लिए आवश्यक समर्थन के बारे में बता सकते हैं।

एक क्वालिफाइड प्रोफेशनल द्वारा सायको-एज्युकेशनल असेसमेंट करवाना भी आवश्यक होता है। इसमें 2 टेस्ट शामिल हैं - एक इंटेलीजेंस (IQ) टेस्ट और एक एजुकेशनल टेस्ट (पढ़ना, लिखना, अंकगणित, मौखिक भाषा, और मेमरी, विजुअल प्रोसेसिंग आदि जैसी अन्य ज्ञान सम्बन्धी कुशलता)। एल.डी. वाले अधिकांश बच्चों के इन दो टेस्ट के स्कोर में काफी अंतर होता है, यानी, उनकी बुद्धि क्षमता (IQ) एवरेज (औसत) या एवरेज से ऊपर होती है लेकिन एजुकेशनल टेस्ट में वे उस क्षमता को पूरी तरह से प्रदर्शित नहीं कर पाते हैं।

असेसमेंट प्रोसेस का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बच्चे से जुड़े विभिन्न लोगों से बात करना भी है। इनमें स्कूल टीचर, ट्यूशन टीचर, माता-पिता, थेरापिस्ट और अगर अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त आयु है, तो खुद बच्चे भी शामिल हो सकते हैं। इन सभी असेसमेंट के परिणामों को एक साथ विचार में ला कर ही निर्धारित किया जा सकता है कि लर्निंग डिसेबिलिटीज़ मौजूद है या नहीं, और यदि है तो किस प्रकार की है।

लर्निंग डिसेबिलिटीज़ वाले बच्चों में अक्सर अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ए.डी.एच.डी.) भी देखा जाता है। ए.डी.एच.डी. के लक्षण होते हैं - अधिक-सक्रियता (हाइपर-एक्टिव), ध्यान न देना और/या आवेग (इम्पल्सिव) - जो बच्चे के निर्देश-पालन की क्षमता और शिक्षण में बाधा डाल सकते हैं। ऐसी स्थिति में, लर्निंग डिसेबिलिटीज़ और ए.डी.एच.डी. दोनों के लिए अलग-अलग समर्थन देने की आवश्यकता होती है।

मेरे बच्चे को एल.डी. क्यों हुआ?

लर्निंग डिसेबिलिटीज़ होने का कोई एक विशिष्ट कारण नहीं है। रिसर्च से पता चलता है कि जेनेटिक्स के साथ-साथ भौतिक वातावरण दोनों ही कारक हो सकते हैं।

मुझे अपने बच्चे के लिए अभी-अभी एल.डी. का निदान मिला है, मुझे क्या करना चाहिए?



कोई भी माता-पिता अपने बच्चे को परेशान होते नहीं देखना चाहते हैं और इस बात का सामना करना कठिन हो सकता है कि आपके बच्चे को लर्निंग डिसेबिलिटीज़ है। आप शायद इस निदान का बच्चे के भविष्य पर असर के बारे में सोच रहे हैं या इस बात को लेकर चिंतित हैं कि बच्चा स्कूल में कैसे करेगा।

सबसे ज़रूरी बात जो आपको याद रखनी चाहिए यह है कि लर्निंग डिसेबिलिटीज़ वाले बच्चे बाकी बच्चों जैसे ही सक्षम होते हैं। उन्हें कुछ क्षेत्रों में सीखने से जुड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन उनके पास अपनी रुचि के क्षेत्रों में अच्छी योग्यता, कौशल और टैलेंट भी होता है, जिसे पहचाना जाना चाहिए और बढ़ावा देना चाहिए।

लर्निंग डिसेबिलिटीज़ से निपटा जा सकता है। लर्निंग डिसेबिलिटीज़ वाले बच्चे सफलता पा सकते और सफल होते भी हैं। यदि आप उनकी लर्निंग डिसेबिलिटीज़ को पॉजिटिव और सहायक दृष्टिकोण से देखते हैं, तो संभावना है कि आपका बच्चा भी यही दृष्टिकोण अपनाएगा। बच्चे के लिए आवश्यक और सही इंटरवेंशन और समर्थन ज़रूर प्राप्त करें।

मेरे बच्चे को किस तरह के इंटरवेंशन की ज़रूरत है?

लर्निंग डिसेबिलिटीज़ वाले बच्चे को प्रोफेशनल सपोर्ट और सेवाओं से लाभ होगा, जिसमें बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं और चुनौतियों के आधार पर निम्नलिखित में से कुछ या सभी सेवाएँ शामिल हो सकती हैं:

- 1. स्पेशल एड्युकेटर:** वे बच्चे, माता-पिता और टीचर के साथ काम करते हैं। बच्चे के लिए सीखने के लक्ष्य, उन्हें सिखाने की स्ट्रेटेजी, उनकी पसंदीदा सीखने की शैली, स्कूल और घर में क्या-क्या सुविधाएँ और संशोधन किये जा सकते हैं, ये इन सब पर काम करते हैं।
- 2. ऑक्युपेशनल थेरेपिस्ट:** वे बच्चे की फाइन मोटर स्किल, बैठने की क्षमता या किसी भी सेंसरी ज़रूरतों में मदद कर सकते हैं जो बच्चे के लिए शैक्षणिक कठिनाइयों का कारण बन सकती हैं। वे दैनिक जीवन के कार्यों की रूटीन बनाने में, जानकारी को छोटे-छोटे भाग में प्रस्तुत करने में भी मदद करते हैं जो बच्चों को खुद को ऑर्गनाइज़ करने में मदद करता है।
- 3. ट्यूशन:** बच्चा स्कूल में जो सीख रहा है उसे बढ़ावा देने के लिए वे बच्चे के साथ व्यक्तिगत काम करते हैं और बच्चे को चुनौतीपूर्ण लगनेवाले क्षेत्रों में अतिरिक्त प्रैक्टिस और सहायता प्रदान करते हैं।
- 4. काउंसलर / साइकोलॉजिस्ट:** वे बच्चे की संपूर्ण भलाई, कार्यों को ऑर्गनाइज़ करने के कौशल सिखाने और काउंसलिंग द्वारा शिक्षण से संबंधित तनाव और चिंता से जूझने के लिए कुछ तकनीक सुझा सकते हैं।

बच्चे के लिए जिस भी इंटरवेंशन का आप विचार करते हैं, लक्ष्य यह रहेगा कि बच्चे को खुद की मदद करने में सक्षम बनाना है। घर पर, सुझाई गई तकनीकों को बढ़ावा देते रहें और उनका पूरा प्रभाव देखने के लिए बताई गई अवधि में लगातार पालन करें।

स्कूल में मेरे बच्चे को किस तरह के सहायता की आवश्यकता है?

लर्निंग डिसएबिलिटीज को दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 (RPWD एक्ट, 2016) के तहत मान्यता प्राप्त 21 डिसएबिलिटीज में शामिल किया गया है। एल.डी. वाले बच्चे निम्नलिखित के हकदार हैं:

- बच्चे की जरूरतों के अनुसार पाठ्यक्रम और परीक्षाओं में उचित सुविधाएँ। सटीक सुविधाएँ हर बोर्ड के अनुसार भिन्न होती हैं, लेकिन आम तौर पर परीक्षा के लिए अतिरिक्त समय, रीडर / राइटर के लिए प्रावधान, दूसरी भाषा से छूट, स्पेलिंग की गलतियों को नज़रअंदाज़ करना आदि शामिल हैं।
- लर्निंग डिसएबिलिटीज वाले बच्चों सहित सभी विकलांग छात्रों के लिए उच्च शिक्षा के कॉलेजों / संस्थानों में सीटों का 5% आरक्षण है।

10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा के लिए परीक्षा रियायतों का लाभ उठाने के लिए, आपको स्कूल के माध्यम से बोर्ड में आवेदन करना होगा। इन रियायतों के लिए अधिकृत सरकारी अस्पतालों से मिला लर्निंग डिसेबिलिटी सर्टिफिकेट* अनिवार्य है।

ऊपर दिए गए अनिवार्य रियायतों के अलावा, यह भी अच्छा होगा कि आप अपने बच्चे की सीखने की जरूरतों में मदद करने के लिए स्कूल के साथ मिलकर काम करें, जहां आप बच्चे को कक्षा में सहायता के लिए टीचर को कुछ सुझाव दे सकते हैं, उदाहरण के लिए:

- व्यक्तिगत समर्थन देना
- नयी जानकारी को छोटे-छोटे भागों में तोड़ना
- जानकारी समझने और कार्यों को पूरा करने के लिए समय देना
- एक सुरक्षित वातावरण देना जहाँ बच्चा गलतियां करने से घबराये नहीं
- बच्चे की मदद करने के लिए एक छात्र / दोस्त को ज़िम्मेदारी देना
- असेसमेंट के अन्य तरीकों का उपयोग करना, जैसे कि ओरल असेसमेंट



* एल.डी. सर्टिफिकेट के लिए एप्लीकेशन के बारे में और मार्गदर्शन के लिए उम्मीद की सोशल वर्क या फैमिली रिसोर्स टीम से संपर्क करें।

मैं अपने बच्चे की मदद करने के लिए क्या कर सकता/ती हूँ?



- **लर्निंग डिसेबिलिटीज़ के बारे में जाने:** एल.डी. वाले बच्चों को उनके लिए काम करने वाली विशेष सहायता और निर्देशों की आवश्यकता हो सकती है। बच्चे खुद अपने-आप को सब से अच्छा जानते हैं - उनके साथ-साथ पढ़ाई और बातचीत करने में समय बिताएं, ताकि आप भी समझ सकें कि उनके लिए क्या काम करता है और क्या नहीं। यह आपको उन्हें बेहतर समर्थन देने और स्कूल में सुझाव साझा करने में भी मदद करेगा। पढ़ाई के अलावा, आपको अपने बच्चे को कार्यकारी कुशलता (ऑर्गनाइज़िंग, प्लानिंग, टाइम-मैनेजमेंट), दोस्त बनाने और मोटर स्किल्स में सुधार लाने में मदद करने की भी आवश्यकता हो सकती है। सहायता की अलग-अलग तरीकों के बारे में जानकारी पायें, आपके जैसे अन्य परिवारों से बात करें, और उन प्रोफेशनल्स से सीखें जो आपके बच्चे की मदद कर रहे हैं।
- **घर पर सीखने को बढ़ावा दें:** प्रोफेशनल्स से सीखी गई चीजों को घर पर भी अभ्यास कर के उन्हें और बढ़ावा दें। पढ़ाई करने और पढ़ने के लिए घर पर एक नियमित रूटीन स्थापित करें। कार्यों को छोटे भागों में तोड़कर, ब्रेक देकर, कठिन कार्यों को आसान कार्यों के साथ मिलाकर घर पर प्रैक्टिस करने में अपने बच्चे की मदद करें। अपने बच्चे को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए प्रशंसा और इनाम दोनों का उपयोग करें।
- **अपने बच्चे के स्कूल के साथ मिलकर काम करें:** स्कूल में अपने बच्चे के लिए ज़रूरी सहयोग पाने के लिए आपको खुलकर बोलना पड़ेगा। अपने बच्चे की ज़रूरतों के बारे में बात करें और अपने बच्चे के टीचर और स्कूल के अन्य स्टाफ के साथ एक सकारात्मक काम-काजी संबंध स्थापित करें। टीचर से समय-समय पर बात करें और ज़्यादातर समस्याएँ बताने के बजाय अधिकतर समाधान सुझाएँ। टीचर को अपने बच्चे के बारे में अपडेट करें और उन से भी पूछें कि आप घर पर अपने बच्चे की शिक्षा का समर्थन कैसे कर सकते हैं। स्कूल या टीचर द्वारा किये गए किसी भी अच्छे काम की सराहना करना ना भूलें।
- **अन्य शिक्षा विकल्पों के बारे में सूचित रहें** ताकि यदि आपको आवश्यकता हो तो आप उस का उपयोग कर सकते हैं। आपके बच्चे के लिए किस तरह का स्कूल सबसे अच्छा रहेगा और इसके लिए कौन से विकल्प उपलब्ध हैं इस बारे में खुले मन से विचार कीजिये। आप एक स्पेशल स्कूल या होम-स्कूलिंग या एन.आई.ओ.एस (NIOS) बोर्ड के बारे में विचार कर सकते हैं। निर्णय लेने के लिए सबसे ज़रूरी बात है जहां आपके बच्चे को आवश्यक समर्थन मिले और जहां वातावरण उसके लिए अनुकूल हो। लेकिन बच्चे की पसंद को भी ध्यान में रखिये।
- **नेगेटिव भावनाओं से निपटना:** बड़े होने की चुनौतियों के साथ-साथ सीखने से जुड़ी समस्याएँ बच्चे को उदास, गुस्सैल या अकेला कर सकती है। बच्चे चिंता, आत्म-सम्मान का अभाव या डिप्रेशन का अनुभव कर सकते हैं। उनको बताएं कि इस तरह से महसूस करना कोई बुरी बात नहीं है और इन भावनाओं को सुरक्षित रूप से व्यक्त करने का जरिया सुझाएँ। अपने बच्चे की ताकत और उपलब्धियों को बढ़ावा दें और उन्हें अपने एल.डी. को 'अलग हूँ पर कम नहीं' के दृष्टिकोण से देखने में मदद करें। कॉन्सेलिंग या किसी अन्य मानसिक स्वास्थ्य सहायता के प्रति खुले विचार रखें जो आपके बच्चे को उसकी भावनाओं से निपटने में मदद कर सकता है।
- **स्कूल की सफलता के बजाय जीवन की सफलता के बारे में सोचें:** जीवन में सफलता स्कूली सफलता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि खुद के प्रति अच्छी भावना, दूसरों से अच्छे सम्बन्ध बनाने की क्षमता और चुनौतियों के बावजूद प्रयास करने का दृढ़ संकल्प, से बनती है। स्कूल में अपने बच्चे के मार्क्स के बारे में बहुत अधिक चिंता न करें, बल्कि चुनौतियों का सामना करने के लिए उनके साहस को बढ़ाएं।



- **खुद का ख्याल रखें:** अपनी जरूरतों को भूलते हुए, अपने बच्चे की जरूरतों को पूरा करना आसान है। लेकिन अगर आप खुद की देखभाल नहीं करते हैं, तो आप ज़्यादा समय तक सही तरह से समर्थन नहीं कर पाएंगे। पर्याप्त आराम करें, उन चीज़ों के लिए समय निकालें जो आपको पसंद हैं (जैसे गाने सुनना, योगा करना, दोस्तों के साथ बातें करना आदि)। अपनी शारीरिक और मानसिक जरूरतों को पर्याप्त महत्व दें।
- **अन्य परिवारों से जुड़ें:** आपके लिए यह बात समझना ज़रूरी है कि आप अकेले नहीं हैं। लर्निंग डिसेबिलिटीज़ काफी आम हैं और आपकी जैसे चुनौतियों का सामना करने वाले कई अन्य परिवार हैं। आप उनसे उनका अनुभव जान सकते हैं, उपयोगी जानकारी पा सकते हैं और सलाह ले सकते हैं। वे आपके लिए एक सहारा भी बन सकते हैं। अपनी यात्रा के शुरुआती चरणों में, 'पैरेंट सपोर्ट ग्रुप' में शामिल होना बहुत फायदेमंद होता है।

अन्य रिसोर्स:

फैमिली रिसोर्स सेंटर (FRC): उम्मीद फैमिली रिसोर्स सेंटर (FRC) डिसेबल बच्चों के माता-पिता से बनी एक टीम है, जो परिवारों की सहायता और आवश्यक जानकारी और संसाधनों पर मार्गदर्शन करने के लिए उपलब्ध है। कृपया FRC टीम से ईमेल: frc@ummeed.org या फ़ोन: 8591850804, पर संपर्क करें:

- अन्य पेरेंट्स से बात करने के लिए
- जानकारी / संसाधन / सहायता / सलाह के लिए
- पैरेंट सपोर्ट ग्रुप में शामिल होने के लिए (अंग्रेजी या हिंदी)
- मनोरंजक कार्यक्रमों में हिस्सा लें और अपने जैसे अन्य परिवारों को मिलें



उम्मीद ट्रेनिंग प्रोग्राम:

RAISE (राइट्स एंड एप्रोच फॉर इनक्लूसिव स्कूल एक्सपीरियंस): बच्चे के स्कूल से जुड़े अधिकारों को जानने के लिए और पेरेंट्स को स्कूल से साथ साझेदारी बनाये रखने के लिए यह एक ट्रेनिंग प्रोग्राम है।

इसके अलावा, उम्मीद डिसेबल बच्चों के माता - पिता के लिए कई ट्रेनिंग आयोजित करता है। अधिक जानकारी के लिए <https://ummeed.org/all-courses/> पर देखें या training.ummeed.org पर ईमेल करें या 85912 91603 व्हाट्सएप मेसेज भेजें।

एल.डी. सम्बंधित ऑनलाइन संसाधन:

डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज़ इंडिया यूट्यूब चैनल -



<https://youtube.com/@developmentaldisabilitiesindia>

सुझाए गए ऑनलाइन संसाधन:

<https://ummeed.org/resource-library/>
www.ldonline.org/
<https://ldaamerica.org/about-us>
<https://www.understood.org/>

उम्मीद चाइल्ड डेवलपमेंट सेंटर

ग्राउंड फ्लोर, मंत्री प्राइड, १-बी, १/६२, एनएम जोशी मार्ग, सुभाष नगर,
लोअर परेल, मुंबई ४०० ०११

Telephone: 022 6248 8100 / 022 2300 2006

<https://ummeed.org/>

Supported by

